''किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

गजेन्द्र सिंह राजपूत
(शोध छात्र)
आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाजकार्य अध्ययनशाला,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती मनीषा पाण्डे
(शोध मार्गदर्शक)
प्राचार्या, युवा व्यावसायिक शिक्षण महाविद्यालय, गुना (म.प्र.)

शोध सार

प्रस्तुत शोधकार्य मध्यप्रदेश प्रांत के ग्वालियर जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर वर्ग के बालक-बालिकाओं (अध्ययन में इन्हें 'किशोर विद्यार्थी' कहा गया है) की शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन संबंधी आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर आंकड़ों को संसाधित कर विश्लेषण विवेचन के अधार पर निष्कर्ष स्थापना की गई है। प्रस्तुत शोध अध्ययन कुल 600 किशोर विद्यार्थियों को न्यादर्श लेकर किया गया है। इस हेतु ग्वालियर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से वर्तमान में अध्ययनरत 13 से 17 आयु के बालक-बालिकाओं को समान लिंगीय अनुपात 300 छात्र एवं 300 छात्राएं को चयनित किया गया। किशोरों की शैक्षिक अभिप्रेरणा को जानने के लिए डॉ .टी.आर .शर्मा, प्रोफेसर एवं डीन, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत 'शैक्षिक अभिप्रेरणा मापनी' का प्रयोग किया गया एवं अध्ययन आदतों को जानने के लिए निर्माण डॉ. बी.वी. पटेल, प्राचार्य, एम.बी .पटेल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आनन्द (खेड़ा) द्वारा निर्मित 'स्वाध्याय आदतें सूची' का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि हेतु शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों के विगत कक्षा के वार्षिक परीक्षा परिणामों को आधार बनाया गया है। आंकड़ों के विवेचन में पाया गया कि शासकीय एवं अशासकीय किशोरों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अंतर नहीं है, अध्ययन आदतों में अंतर नहीं है एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्द :

किशोर विद्यार्थी, अभिप्रेरणा, अध्ययन आदतें, उपलब्धि

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग है। इसके बिना हमारा जीवन अपूर्ण है। शिक्षा और जीवन साथ-साथ चलते हैं। इसलिए शिक्षा को जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया कहा गया है। इस संदर्भ में जीवन ही शिक्षा है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य का मानसिक, शारीरिक, भावात्मक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक इत्यादि सभी पक्षों का विकास होता है। प्रत्येक बालक कुछ जन्मजात शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। उन जन्मजात शक्तियों को विकसित करना तथा उन्हें दिशा देना ही शिक्षा है। शिक्षा व्यक्ति की रचनात्मक तथा सृजनात्मक शक्तियों को विकसित करती है। छात्रों का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा है। इस दृष्टि से देखा जाये तो आज हमारी शिक्षा इस दिशा में कहीं न कहीं असफल है। हम उत्तम तथा चरित्रवान नागरिक पैदा करने में पिछड़ रहे हैं। किसी शिक्षाशास्त्री ने भारतीय माध्यमिक शिक्षा के विषय में पूर्णतः सत्य ही कहा है, "देश के भावी कर्णधार माध्यमिक शिक्षा के ढांचे में बनते और बिगड़ते हैं। सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता इसी स्तर पर उत्पन्न की जाती है। दुर्भाग्यवश शिक्षा की यह कड़ी जितनी महत्वपूर्ण और अनिवार्य है उतनी ही निर्बल व उपेक्षित भी है।" किशोरावस्था ही वह समय है जबकि बालक अपना भविष्य निर्धारित कर सकता है, अपनी समस्त योग्यताओं एवं क्षमताओं को विकसित कर आने वाले समय में स्वयं को सिद्ध कर सकता है। यही वह अवस्था है जबकि अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा किशोरों को समुचित मार्गदर्शन किया जाए। अपने लक्ष्यों के प्रति अभिप्रेरित किया जाए। शिक्षा में उपलब्धि के उच्च प्रयास हेतु उनकी अध्ययन आदतों का परिष्कार किया जाए। यह अवस्था तो बहते हुए पानी की तरह है जिसे उचित मार्ग नहीं दिखाया गया तों किसी भी दिशा में बह-कर खुद को व्यर्थ खर्च कर ही देगा। हमारी सिद्धियों के फल की प्राप्तियों की इस बहुमूल्य समयावधि अर्थात् किशोरावस्था को यदि गम्भीरता से नहीं लिया गया तो हमारे इस काल से पूर्व की एवं पश्चात की शिक्षा के प्रयासों के परिणाम यथोचित और मनोनुकूल नहीं होंगे। इससे हमारे श्रम, समय और शक्ति का ह्रास होता रहेगा।

गत वर्षों में समाज में सभ्यता के विकास के साथ-साथ शैक्षिक जगत में भी कठिन प्रतियोगिता का जन्म हुआ है। सभी छात्र-छात्राएं परीक्षा में उच्च उपलब्धि प्राप्त करना चाहते हैं। इसी दृष्टि से किशोर पीढ़ी में शैक्षिक पिछड़ापन देखने को मिल रहा है। अभिभावकों द्वारा किशोर-पीढ़ी को उचित शैक्षिक अभिप्रेरणा प्रदान न कर पाने के कारण उनकी अध्ययन आदतें प्रभावित हो रही हैं जिससे उनमें शैक्षिक पिछड़ापन बढ़ रहा है। यह शैक्षिक पिछड़ापन शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति के मार्ग में बाधा है। जिसका निवारण न केवल किशोर बालकों हेतु वरन् सम्पूर्ण समाज-हित को ध्यान में रखकर करना होगा।

शोध के उद्देश्य –

1. किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना –

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं है।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं है।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की अध्ययन विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वर्तमान अध्ययन एक मानकीय सर्वेक्षण है। इसमें सर्वेक्षण अनुसंधान के आधारभूत सिद्धांतों का अनुपालन किया गया है।

शोध में चयनित न्यादर्श –

जनसंख्या के अधिक प्रसार को देखते हुए शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श प्रणाली को अपनाया गया है। ग्वालियर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से वर्तमान में अध्ययनरत 13 से 17 आयु के बालक-बालिकाओं को समान क्षेत्रीय (शहरी एवं ग्रामीण) एवं लिंगीय अनुपात 300 छात्र एवं 300 छात्राएं को चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

1. शैक्षिक अभिप्रेरणा मापनी - डॉ. टी.आर. शर्मा,
2. स्वाध्याय आदतें सूची - डॉ. बी.वी. पटेल,
3. शैक्षिक उपलब्धि – विद्यार्थियों के विगत कक्षा के वार्षिक परीक्षा परिणाम।

आंकड़ों का वर्गीकरण एवं व्याख्या –

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोरों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन आदते और शैक्षिक उपलब्धि की सांख्यिकी

क्र. स.	समूह (Group)	संख्या (N)	चर (Variable)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (C.R.)
1	शासकीय विद्यालयों के किशोर	300	शैक्षिक अभिप्रेरणा	25.81	5.37	**2.49**
			अध्ययन आदतें	157.9	14.79	**2.21**
			शैक्षिक उपलब्धि	417.20	38.18	**0.12**
2	अशासकीय विद्यालयों के किशोर	300	शैक्षिक अभिप्रेरणा	26.88	5..14	**2.49**
			अध्ययन आदतें	160.52	14.27	**2.21**
			शैक्षिक उपलब्धि	417.58	40	**0.12**

सार्थकता 0.01 स्तर – 2.58 Degree of freedom (df) = (300-1)+(300-1)=598 0.05 स्तर – 1.96

व्याख्या परिकल्पना 1-

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शासकीय विद्यालयों के किशोरों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मध्यमान 158 एवं मानक विचलन 14.75 है तथा अशासकीय विद्यालयों के किशोरों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मध्यमान 160.41 एवं मानक विचलन 14.31 है। क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 2.04 है।

598 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.58 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 होता है। गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 2.04 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर से कम है एवं 0.05 सार्थकता स्तर से अधिक है।

अत: परिकल्पना सं. 1 *"शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं है।"* स्वीकृत होती है।

व्याख्या परिकल्पना 2-

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शासकीय विद्यालयों के किशोरों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 158 एवं मानक विचलन 14.75 है तथा अशासकीय विद्यालयों के किशोरों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 160.41 एवं मानक विचलन 14.31 है। क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 2.04 है।

598 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.58 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 होता है। गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 2.04 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर से कम है एवं 0.05 सार्थकता स्तर से अधिक है।

अत: परिकल्पना सं. 2 *"शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं है।"* स्वीकृत होती है।

व्याख्या परिकल्पना 3-

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शासकीय विद्यालयों के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 158 एवं मानक विचलन 14.75 है तथा अशासकीय विद्यालयों के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 160.41 एवं मानक विचलन 14.31 है। क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 2.04 है।

598 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.58 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 होता है। गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात (C.R.) का मान 2.04 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर से कम है एवं 0.05 सार्थकता स्तर से अधिक है।

अत: परिकल्पना सं. 3 *"शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर नहीं है।"* स्वीकृत होती है।

शोध की उपलब्धियॉं -

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के पश्चात जो परिणाम प्राप्त हुए हैं समस्या के प्रत्येक चर के लिए उनकी अलग-अलग उपयोगिता है। विगत परीक्षा परिणामों और अनुसंधान आदि से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि अध्ययन आदतों में आये नकारात्मक परितर्वनों के कारण किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पिछड़ रही है। इसके लिए सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक स्तर पर इन्हें अभिप्रेरित किया जाना चाहिए एवं विद्यार्थियों में अच्छी अध्ययन आदतों का निर्माण किया जाना आवश्यक है। किशोरों के शैक्षिक पिछड़ेपन के सुधार के लिए व्यक्तिगत, सामुदायिक एवं सरकारी स्तर पर प्रयास किये जाते रहे हैं। यद्यपि इन प्रयासों का कुछ असर हमें देखने को भी मिल रहा है किंतु अपेक्षाकृत कम ही रहा है। अतः इनके शैक्षिक पिछड़ेपन के स्तर को उच्च करने हेतु सरकारी प्रयासों के साथ-साथ हमें पारिवारिक स्तर एवं सामाजिक स्तर पर भी प्रयास करने होंगे।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत शोध में विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर बालक-बालिकाओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन संबंधी आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से परिणाम निकाले गए एवं यह पाया गया कि किशोरों की अभिप्रेरणा एवं अध्ययन आदतों में कुछ वर्गो में परस्पर अंतर प्राप्त हुआ परंतु शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ :

1. *डॉ. आर.ए. शर्मा, शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, पृ. 154*
2. *मित्तल, संतोष एवं मित्तल दीपशिखा (2002) "बाल मनोविज्ञान", यूनिवर्सिटी बंक हाउस लिमिटेड, जयपुर*
3. *पारस नाथ राय, अनुसंधान परिचय, पृ. 95*
4. *Bruce W.Tuckman, 1978 (Research methodology techniques and trends) 2008, Dr. Y.K. Singh and Dr. R.B. Bajpai, APH Publishing corp. New Delhi page no. 63.*
5. *Shodh Dhara, Educational & Research Institute, Orai, Vol. II, March, pp. 123-131*
6. *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, लखनऊ, पृ. 30*
7. *Shodhaytan (June 2017), AISECT University, Bhopal (M. P.), Vol. IV, Issue-VII.*
8. *The CTE National Journal (Jan.-Dec., 2014), International House, E-4/149, Arera Colony, Bhopal-462016*
9. *Journal of Education and Psychology, B.H.U., Varanasi -5.*
10. *http://hdl.handle.net/10603/333669*

Contributors Details:

गजेन्द्र सिंह राजपूत
(शोध छात्र)
आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाजकार्य अध्ययनशाला,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती मनीषा पाण्डे
(शोध मार्गदर्शक)
प्राचार्या, युवा व्यावसायिक शिक्षण महाविद्यालय, गुना (म.प्र.)